• वास्तु...

छत पर पौधे

छत पर पौधे रखने को लेकर लोगों के मन में अक्सर कंफ्यूजन रहती है कि क्या छत पर पौधे रखने चाहिए या नहीं, अगर नहीं रखने चाहिए तो क्यों? छत पर पौधे रखने से पहले वास्तु नियमों के बारे में पता होना चाहिए।

▸ वास्तु शास्त्र के मुताबिक, छत पर पौधे रखना अशुभ माना जाता है, खासतौर पर तब जब उन्हें गमले में रखा गया हो। आजकल घर की छत को खूबसूरत बनाने के लिए लोग वहां तरह-तरह के पौधे और गमले रखते हैं। कई लोग तो पूरी छत को ही रूफ गार्डन में बदल देते हैं। लेकिन वास्तु के अनुसार, छत पर पौधे रखने को लेकर कुछ नियम बताए गए हैं। कहा जाता है कि अगर सही दिशा और संतुलन का ध्यान न रखा जाए, तो इसका असर घर की ऊर्जा और परिवार की तरक्की पर पड़ सकता है।

▸ ज्योतिषीय मान्यताओं में घर की छत का संबंध राहु से माना जाता है, जबकि हरे पेड़-पौधों को बुध ग्रह से जोड़ा जाता है। बुध को बुद्धि, शिक्षा, वाणी और हरियाली का कारक माना गया है। वहीं राहु को भ्रम, अचानक बदलाव और अस्थिरता से संबंधित ग्रह माना जाता है। इसी वजह से मान्यता है कि छत पर जरूरत से ज्यादा पौधे रखने से राहु और बुध से जुड़ी ऊर्जाओं का संतुलन प्रभावित हो सकता है।

▸ वास्तु की मानें तो छत पर हरियाली रखना हो तो बहुत ज्यादा गमले लगाने से बचने की सलाह दी जाती है। खासकर बड़े और भारी गमलों की संख्या कम रखना बेहतर माना जाता है। सीमित संख्या में छोटे पौधे रखकर छत को हरा-भरा बनाया जा सकता है। अगर छत पर पौधे रखने हैं तो उन्हें पश्चिम दिशा की तरफ रखना बेहतर माना जाता है। गमलों को व्यवस्थित तरीके से रखने की सलाह दी जाती है, ताकि छत का बाकी हिस्सा खुला और हल्का रहे।

▸ वास्तु में उत्तर और पूर्व दिशाओं को खास महत्व दिया जाता है। इन दिशाओं को हल्का और खुला रखना शुभ माना जाता है। इसलिए यहां बहुत अधिक या भारी गमले रखने से बचने की सलाह दी जाती है। वास्तु की मान्यता है कि इन दिशाओं में ज्यादा पौधे या भारी वस्तुएं रखने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह प्रभावित हो सकता है। इसका असर परिवार की तरक्की, शिक्षा और नए अवसरों से जोड़कर देखा जाता है।

▸ अगर आपने छत पर पौधे लगा रखे हैं तो उनकी देखभाल भी जरूरी है। सूखे, मुरझाए या खराब हो चुके पौधों को लंबे समय तक वहीं छोड़ना वास्तु की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता. समय-समय पर पौधों की सफाई और छंटाई करते रहना चाहिए।

• घर पर...

हनुमान जी की तस्वीर

हिंदू धर्म में भगवान हनुमान को संकटमोचन कहा जाता है। मान्यता है कि जो भक्त सच्चे मन से बजरंगबली को याद करता है, उसके जीवन से भय और नकारात्मकता दूर होती है। मंगलवार के दिन हनुमान जी की पूजा और उनके अलग-अलग स्वरूपों का ध्यान करने का विशेष महत्व बताया गया है। हनुमान जी के कई रूपों का वर्णन धार्मिक ग्रंथों और लोक मान्यताओं में मिलता है। कहीं वे भगवान राम की सेवा करते हुए दिखाई देते हैं तो कहीं पर्वत उठाए हुए, ध्यान मुद्रा में या पंचमुखी स्वरूप में नजर आते हैं. मान्यता है कि इन अलग-अलग स्वरूपों का संबंध जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों से जोड़ा जाता है।

संकट और डर से परेशान हैं तो कौन सी तस्वीर लगाएं?

अगर घर में बार-बार किसी तरह का भय बना रहता है या परिवार के सदस्यों को नकारात्मकता और असुरक्षा महसूस होती है, तो हनुमान जी की ऐसी तस्वीर लगाने की मान्यता है जिसमें वे वीर मुद्रा में दिखाई दे रहे हों। ऐसी तस्वीर को साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक माना जाता है।

स्वास्थ्य और मुश्किल समय के लिए संजीवनी पर्वत वाली तस्वीर

हनुमान जी के उन स्वरूपों में संजीवनी पर्वत उठाए हुए तस्वीर काफी प्रसिद्ध है। धार्मिक कथा के अनुसार, जब लक्ष्मण मूर्छित हो गए थे, तब हनुमान जी संजीवनी बूटी लाने के लिए पूरा पर्वत ही उठा लाए थे। इसी कथा के कारण संजीवनी पर्वत वाली तस्वीर को कठिन परिस्थितियों में उम्मीद, साहस और संकट से बाहर निकलने की भावना से जोड़ा जाता है। घर में ऐसी तस्वीर रखने वाले लोग इसे मुश्किल समय में धैर्य बनाए रखने के प्रतीक के रूप में देखते हैं।

हर तरफ से संकट हो तो पंचमुखी हनुमान

पंचमुखी हनुमान जी का स्वरूप धार्मिक दृष्टि से बेहद शक्तिशाली माना जाता है। इस स्वरूप में भगवान हनुमान के पांच मुख बताए गए हैं। मान्यता है कि पंचमुखी हनुमान की आराधना भय, नकारात्मकता और बाधाओं से रक्षा के लिए की जाती है। अगर परिवार में लगातार परेशानियां चल रही हों या व्यक्ति खुद को मानसिक रूप से असुरक्षित महसूस करता हो, तो पंचमुखी हनुमान की पूजा की जाती है। कई घरों में पंचमुखी हनुमान की तस्वीर या प्रतिमा को विशेष स्थान पर स्थापित कर रोजाना पूजा करने की परंपरा भी है।

मन अशांत है तो ध्यान मुद्रा वाले हनुमान

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव और बेचैनी आम समस्या बन गई है। ऐसे में हनुमान जी की ध्यान मुद्रा वाली तस्वीर मन को एकाग्र करने और शांति का भाव पैदा करने के लिए शुभ मानी जाती है.ध्यान मुद्रा में बैठे हनुमान जी की तस्वीर भगवान के शांत और भक्तिमय स्वरूप को दर्शाती है. मान्यता है कि पूजा स्थल पर ऐसी तस्वीर रखने और कुछ समय शांत होकर उसका ध्यान करने से मन को स्थिरता मिलती है। यह तस्वीर खास तौर पर उन लोगों को पसंद आती है जो पूजा के साथ ध्यान और आध्यात्मिक साधना करना चाहते हैं।

डॉ. राजेश ने नगरोटा के स्कूलों में छात्रों व शिक्षकों से जाना जमीनी हाल

■ राहुल कुमार

- छात्रों की समस्याएं सुनीं, तैयारियों का लिया जायजा
- शिक्षकों के फीडबैक से सुधरेगी मूल्यांकन व्यवस्था
- औपचारिक निरीक्षण नहीं, सुधार की है ठोस पहल

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी व छात्र-केंद्रित बनाने के लिए बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा अब सीधे एक्शन मोड में आ गए हैं। दफ्तरों में बैठकर नीतियां बनाने की पारंपरिक शैली को दरकिनार करते हुए, उन्होंने शिक्षा और परीक्षा व्यवस्था की जमीनी हकीकत जानने के लिए सीधे स्कूलों का रुख किया है। इसी कड़ी में डॉ. शर्मा ने नगरोटा बगवां के विद्यालयों का दौरा कर विद्यार्थियों और शिक्षकों से सीधा संवाद स्थापित किया और व्यवस्था में सुधार के लिए उनसे बेबाक फीडबैक लिया।

बोर्ड अध्यक्ष ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल), नगरोटा बगवां तथा ग्रीन लैंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल का विस्तृत दौरा किया। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों के बीच जाकर उनकी पढ़ाई, आगामी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारियों और उन्हें पेश आ रही कठिनाइयों पर खुलकर चर्चा की। डॉ. शर्मा ने छात्रों की समस्याओं और अपेक्षाओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए स्पष्ट किया कि भविष्य में बोर्ड के हर निर्णय और व्यवस्था के केंद्र में केवल विद्यार्थी ही होंगे। उन्होंने छात्रों का हौसला बढ़ाते हुए उन्हें पूरे आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया।

विद्यार्थियों के साथ-साथ डॉ. शर्मा ने शिक्षकों के साथ भी अहम बैठक की। उन्होंने परीक्षा के संचालन, उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन व्यवस्था, पाठ्यक्रम से जुड़े विषयों और स्कूल स्तर पर आ रही व्यावहारिक समस्याओं की विस्तार से जानकारी ली। शिक्षकों को संबोधित करते हुए बोर्ड अध्यक्ष ने कहा कि शिक्षा का असल ढांचा शिक्षक ही तैयार करते हैं, इसलिए उनके अनुभव और सुझाव बोर्ड के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं सुझावों के आधार पर वर्तमान व्यवस्था की खामियों को दूर किया जाएगा।

अपने इस दौरे का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए डॉ. राजेश शर्मा ने कहा शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक तस्वीर कार्यालय में बैठकर नहीं, बल्कि विद्यालयों में पहुंचकर ही समझी जा सकती है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि यह दौरा कोई औपचारिकता या रूटीन निरीक्षण नहीं है, बल्कि बोर्ड की नीतियों को जमीनी स्तर पर लागू करने में आ रही चुनौतियों को समझने का एक माध्यम है।

इस जमीनी फीडबैक के जरिए हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड को भविष्य में अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और संवेदनशील बनाने की दिशा में काम किया जाएगा। शिक्षा जगत के जानकारों का मानना है कि बोर्ड अध्यक्ष द्वारा स्कूलों और बोर्ड के बीच सीधा संवाद स्थापित करने की यह पहल शिक्षा प्रणाली में दूरगामी और सकारात्मक बदलाव लाएगी।

• भाग्य...

सफेद मोती की अंगूठी

मोती को भगवान शिव और चंद्रमा से भी जोड़ा जाता है। सोमवार भगवान शिव को समर्पित है और मोती का संबंध चंद्रमा से माना गया है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार मोती को मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और मन को शांत रखने वाला रत्न माना जाता है। हालांकि, हर व्यक्ति के लिए मोती पहनना सही हो, ये जरूरी नहीं है। मोती को चांदी की अंगूठी में बनवाकर पहनना शुभ माना जाता है। इसे दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली यानी सबसे छोटी उंगली में धारण करने की सलाह दी जाती है। मोती धारण करने के लिए सोमवार का दिन शुभ माना जाता है। खासतौर पर शुक्ल पक्ष के सोमवार या पूर्णिमा के दिन चंद्रमा उदय होने के बाद मोती पहनने की परंपरा बताई जाती है। मोती धारण करने से पहले उसे गंगाजल या गाय के दूध से धोकर शुद्ध किया जा सकता है। इसके बाद कुछ समय के लिए मोती की अंगूठी को भगवान शिव के चरणों में या शिवलिंग के पास रखा जाता है।

• बाथरूम...

वास्तु मान्यताओं के अनुसार, देवी-देवताओं की तस्वीरें, मूर्तियां या पूजा से जुड़ी वस्तुएं बाथरूम में नहीं रखनी चाहिए। बाथरूम को धार्मिक वस्तुओं के लिए उचित स्थान नहीं माना जाता। ऐसी चीजों को हमेशा साफ और पवित्र स्थान पर रखना बेहतर माना जाता है। अक्सर बाथरूम में खाली शैंपू की बोतलें, पुराने डिब्बे और इस्तेमाल न होने वाला सामान जमा हो जाता है। वास्तु के अनुसार, बेकार चीजों का जमाव घर में अव्यवस्था बढ़ाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित